

◎中国古典名著

麻成林 主编

宋词三百首



中国古典名著

Zhongguo guodian mingzhu

宋词三百首

麻成林



吉林大学出版社

图书在版编目 CIP 数据

中国古典名著/麻成林主编—长春：吉林大学出版社，2004.12
ISBN 7-5601-2865-3

I. 中… II. 麻… III. 文学—名著
IV. I. 404

中国版本图书馆 CIP 数据核字（2004）第 108236 号

中国古典名著

主 编：麻成林
责任编辑：赵广宇
责任校对：赵广宇
出 版：吉林大学出版社
发 行：吉林大学出版社
印 刷：湖北胜美印务有限责任公司
开 本：850×1168 毫米 32 开
版 次：2005 年 1 月第 1 版
印 次：2005 年 1 月第 1 次印刷

书 号：ISBN7-5601-2865-3/I·404
定 价：1400.00 元

目 录

宴山亭	赵 信(1)	踏莎行	晏 殊(20)
木兰花	钱惟演(2)	蝶恋花	晏 殊(21)
渔家傲	范仲淹(3)	凤箫吟	韩 镶(22)
苏幕遮	范仲淹(4)	木兰花	宋 祁(23)
御街行	范仲淹(5)	采桑子	欧阳修(24)
千秋岁	张 先(6)	诉衷情	欧阳修(25)
醉垂鞭	张 先(8)	踏莎行	欧阳修(26)
一丛花	张 先(9)	蝶恋花	欧阳修(27)
天仙子	张 先(10)	蝶恋花	欧阳修(28)
青门引	张 先(11)	蝶恋花	欧阳修(29)
浣溪沙	晏 殊(12)	木兰花	欧阳修(29)
浣溪沙	晏 殊(13)	浪淘沙	欧阳修(30)
清平乐	晏 殊(14)	青玉案	欧阳修(31)
清平乐	晏 殊(15)	曲玉管	柳 永(32)
木兰花	晏 殊(16)	雨霖铃	柳 永(33)
木兰花	晏 殊(17)	蝶恋花	柳 永(35)
玉楼春	晏 殊(18)	采莲令	柳 永(36)
踏莎行	晏 殊(19)	浪淘沙慢	柳 永(37)

- | | | | |
|------|---------|-------|---------|
| 定风波 | 柳永(38) | 留春令 | 晏几道(65) |
| 少年游 | 柳永(40) | 虞美人 | 晏几道(66) |
| 戚氏 | 柳永(41) | 思远人 | 晏几道(67) |
| 夜半乐 | 柳永(43) | 菩萨蛮 | 晏几道(68) |
| 玉蝴蝶 | 柳永(45) | 水调歌头 | 苏轼(69) |
| 八声甘州 | 柳永(46) | 水龙吟 | 苏轼(71) |
| 迷神引 | 柳永(48) | 念奴娇 | 苏轼(72) |
| 竹马子 | 柳永(49) | 永遇乐 | 苏轼(73) |
| 桂枝香 | 王安石(50) | 洞仙歌 | 苏轼(75) |
| 千秋岁引 | 王安石(51) | 卜算子 | 苏轼(76) |
| 清平乐 | 王安国(52) | 青玉案 | 苏轼(77) |
| 临江仙 | 晏几道(53) | 临江仙 | 苏轼(78) |
| 蝶恋花 | 晏几道(54) | 定风波 | 苏轼(80) |
| 蝶恋花 | 晏几道(56) | 江城子 | 苏轼(81) |
| 鹧鸪天 | 晏几道(57) | 贺新郎 | 苏轼(83) |
| 生查子 | 晏几道(58) | 望海潮 | 秦观(84) |
| 玉楼春 | 晏几道(59) | 八六子 | 秦观(85) |
| 木兰花 | 晏几道(59) | 满庭芳 | 秦观(86) |
| 清平乐 | 晏几道(60) | 满庭芳 | 秦观(87) |
| 阮郎归 | 晏几道(61) | 减字木兰花 | |
| 阮郎归 | 晏几道(62) | | 秦观(89) |
| 六么令 | 晏几道(63) | 浣溪沙 | 秦观(90) |
| 御街行 | 晏几道(64) | 阮郎归 | 秦观(91) |

- | | | | |
|-----|----------|------|----------|
| 绿头鸭 | 晁端礼(92) | 满庭芳 | 周邦彦(115) |
| 蝶恋花 | 赵令畤(93) | 过秦楼 | 周邦彦(117) |
| 蝶恋花 | 赵令畤(94) | 花犯 | 周邦彦(119) |
| 清平乐 | 赵令畤(95) | 大酺 | 周邦彦(120) |
| 水龙吟 | 晁补之(96) | 解语花 | 周邦彦(122) |
| 忆少年 | 晁补之(97) | 蝶恋花 | 周邦彦(123) |
| 洞仙歌 | 晁补之(98) | 解连环 | 周邦彦(124) |
| 临江仙 | 晁补之(99) | 拜星月慢 | 周邦彦(125) |
| 虞美人 | 舒 熹(100) | 关河令 | 周邦彦(126) |
| 渔家傲 | 朱 服(100) | 绮寮怨 | 周邦彦(127) |
| 惜分飞 | 毛滂(101) | 尉迟杯 | 周邦彦(128) |
| 菩萨蛮 | 陈 克(102) | 西 河 | 周邦彦(129) |
| 菩萨蛮 | 陈 克(103) | 瑞鹤仙 | 周邦彦(131) |
| 洞仙歌 | 李元膺(104) | 浪淘沙慢 | 周邦彦(132) |
| 青门饮 | 时 庾(105) | 应天长 | 周邦彦(133) |
| 卜算子 | 李之仪(106) | 夜游宫 | 周邦彦(134) |
| 谢池春 | 李之仪(107) | 青玉案 | 贺 铸(135) |
| 瑞龙吟 | 周邦彦(108) | 感皇恩 | 贺 铸(137) |
| 风流子 | 周邦彦(109) | 薄 幸 | 贺 铸(138) |
| 兰陵王 | 周邦彦(111) | 浣溪沙 | 贺 铸(139) |
| 琐窗寒 | 周邦彦(112) | 浣溪沙 | 贺 铸(140) |
| 六 丑 | 周邦彦(113) | 石州引 | 贺 铸(140) |
| 夜飞鹊 | 周邦彦(114) | 蝶恋花 | 贺 铸(142) |

- | | | | | | |
|------|-------|----------|------|-------|----------|
| 天门谣 | | 贺 铸(143) | 蓦山溪 | | 曹 组(168) |
| 天 香 | | 贺 铸(144) | 贺新郎 | | 李 玉(169) |
| 望湘人 | | 贺 铸(145) | 烛影摇红 | | 廖世美(171) |
| 绿头鸭 | | 贺 铸(146) | 薄 幸 | | 吕滨老(172) |
| 石州慢 | | 张元幹(147) | 南 浦 | | 鲁逸仲(173) |
| 兰陵王 | | 张元幹(148) | 满江红 | | 岳 飞(174) |
| 贺新郎 | | 叶梦得(150) | 烛影摇红 | | 张 抡(175) |
| 虞美人 | | 叶梦得(151) | 水龙吟 | | 程 垢(177) |
| 点绛唇 | | 汪 蕤(152) | 六州歌头 | | 张孝祥(178) |
| 喜迁莺 | | 刘一止(153) | 念奴娇 | | 张孝祥(179) |
| 高阳台 | | 韩 嘤(154) | 好事近 | | 韩元吉(180) |
| 汉宫春 | | 李 郁(155) | 六州歌头 | | 韩元吉(181) |
| 临江仙 | | 陈与义(156) | 瑞鹤仙 | | 袁去华(182) |
| 临江仙 | | 陈与义(157) | 剑器近 | | 袁去华(183) |
| 苏武慢 | | 蔡 伸(158) | 安公子 | | 袁去华(184) |
| 柳梢青 | | 蔡 伸(159) | 瑞鹤仙 | | 陆 淞(185) |
| 鹧鸪天 | | 周紫芝(160) | 卜算子 | | 陆 游(187) |
| 踏莎行 | | 周紫芝(161) | 水龙吟 | | 陈 亮(187) |
| 帝台春 | | 周紫芝(162) | 忆秦娥 | | 范成大(188) |
| 忆王孙 | | 李重元(163) | 眼儿媚 | | 范成大(189) |
| 三 台 | | 万俟咏(164) | 霜天晓角 | | 范成大(190) |
| 二郎神 | | 徐 伸(166) | 贺新郎 | | 辛弃疾(190) |
| 江神子慢 | ... | 田 为(167) | 念奴娇 | | 辛弃疾(191) |

汉宫春	辛弃疾(193)	翠楼吟	姜夔(219)
贺新郎	辛弃疾(194)	杏花天	姜夔(220)
摸鱼儿	辛弃疾(195)	一萼红	姜夔(221)
水龙吟	辛弃疾(197)	霓裳中序第一		
永遇乐	辛弃疾(198)		姜夔(223)
木兰花慢	...	辛弃疾(199)	小重山	章良能(225)
祝英台近	...	辛弃疾(200)	唐多令	刘过(226)
青玉案	辛弃疾(201)	木兰花	严仁(227)
鹧鸪天	辛弃疾(202)	风入松	俞国宝(227)
菩萨蛮	辛弃疾(203)	满庭芳	张镃(228)
琵琶仙	姜夔(204)	宴山亭	张镃(229)
点绛唇	姜夔(205)	绮罗香	史达祖(230)
鹧鸪天	姜夔(206)	双双燕	史达祖(232)
踏莎行	姜夔(207)	东风第一枝		
庆宫春	姜夔(208)		史达祖(233)
齐天乐	姜夔(209)	喜迁莺	史达祖(234)
八归	姜夔(210)	三姝媚	史达祖(236)
念奴娇	姜夔(211)	秋霁	史达祖(237)
扬州慢	姜夔(213)	夜合花	史达祖(238)
长亭怨慢	...	姜夔(214)	玉蝴蝶	史达祖(239)
淡黄柳	姜夔(215)	八归	史达祖(240)
暗香	姜夔(216)	生查子	刘克庄(242)
疏影	姜夔(217)	贺新郎	刘克庄(243)

宋词三百首

- | | | | |
|------|----------|------|----------|
| 贺新郎 | 刘克庄(244) | 三姝媚 | 吴文英(270) |
| 木兰花 | 刘克庄(245) | 八声甘州 | 吴文英(271) |
| 江城子 | 卢祖皋(246) | 踏莎行 | 吴文英(272) |
| 宴清都 | 卢祖皋(247) | 瑞鹤仙 | 吴文英(273) |
| 南乡子 | 潘牥(249) | 鹧鸪天 | 吴文英(275) |
| 瑞鹤仙 | 陆睿(250) | 夜游宫 | 吴文英(276) |
| 渡江云 | 吴文英(251) | 贺新郎 | 吴文英(277) |
| 夜合花 | 吴文英(252) | 唐多令 | 吴文英(278) |
| 霜叶飞 | 吴文英(253) | 湘春夜月 | 黄孝迈(279) |
| 宴清都 | 吴文英(255) | 大有 | 潘希白(280) |
| 齐天乐 | 吴文英(256) | 青玉案 | 黄公绍(281) |
| 花犯 | 吴文英(257) | 摸鱼儿 | 朱嗣发(282) |
| 浣溪沙 | 吴文英(258) | 兰陵王 | 刘辰翁(284) |
| 浣溪沙 | 吴文英(259) | 宝鼎现 | 刘辰翁(285) |
| 点绛唇 | 吴文英(260) | 永遇乐 | 刘辰翁(286) |
| 祝英台近 | 吴文英(261) | 摸鱼儿 | 刘辰翁(288) |
| 澡兰香 | 吴文英(262) | 高阳台 | 周密(289) |
| 风入松 | 吴文英(263) | 瑶华 | 周密(290) |
| 祝英台近 | 吴文英(264) | 玉京秋 | 周密(291) |
| 莺啼序 | 吴文英(265) | 曲游春 | 周密(292) |
| 惜黄花慢 | 吴文英(266) | 花犯 | 周密(294) |
| 高阳台 | 吴文英(268) | 瑞鹤仙 | 蒋捷(295) |
| 高阳台 | 吴文英(269) | 贺新郎 | 蒋捷(297) |



- | | | | | | |
|------|-------|----------|---------|-------|----------|
| 女冠子 | | 蒋 捷(298) | 法曲献仙音 | | 王沂孙(313) |
| 高阳台 | | 张 炎(299) | 疏 影 | | 彭元逊(314) |
| 渡江云 | | 张 炎(300) | 六 丑 | | 彭元逊(315) |
| 八声甘州 | | 张 炎(302) | 紫萸香慢 | | 姚云文(316) |
| 解连环 | | 张 炎(303) | 金明池 | | 僧 挥(318) |
| 疏 影 | | 张 炎(304) | 凤凰台上忆吹箫 | | |
| 月下笛 | | 张 炎(305) | | | 李清照(319) |
| 天 香 | | 王沂孙(306) | 醉花阴 | | 李清照(320) |
| 眉 妍 | | 王沂孙(308) | 声声慢 | | 李清照(321) |
| 齐天乐 | | 王沂孙(309) | 念奴娇 | | 李清照(322) |
| 长亭怨慢 | | 王沂孙(310) | 永遇乐 | | 李清照(324) |
| 高阳台 | | 王沂孙(311) | | | |

宴山亭

北行见杏花

赵信

裁剪冰绡^①，轻叠数重，淡着燕脂匀注。新样靓妆^②，艳溢香融，羞杀蕊珠宫女。易得凋零，更多少、无情风雨。愁苦，问院落凄凉，几番春暮？凭寄离恨重重，者双燕何曾^③，会人言语？天遥地远，万水千山，知他故宫何处？怎不思量？除梦里有时曾去。无据^④，和梦也新来不做^⑤。

【注释】 ①冰绡：白绸。 ②靓妆：以脂粉装饰。
③者：即指示代词“这”。 ④无据：不足依凭，无所依据。 ⑤和：连。新来：近来。

【点评】 这首词上片描写杏花，运笔极其细腻，好似在作工笔画。那些开放的杏花，如同一叠叠冰清玉洁的白绸，经过巧手，裁剪出重重花瓣，还晕染上淡淡的胭脂。连天子宫阙里的仙女也比不上。接着从杏花的极盛，写到杏花凋零的可哀，忽转变徵之音，大有一落

千丈之概。

下片抒写离恨哀情，层层深入，愈转愈深，愈深愈痛。第一层写看见燕子飞回故巢，便想托付它们寄去重重离恨，但它们恐怕领会不了人们的千言万语；第二层叹息身为俘虏，故宫相隔万水千山，再见不知何年；第三层以设问说明怀恋故国之情，惟有梦里曾到；第四层揭出近来梦都不做。内心百折千回，真是肝肠断绝之音。

木 兰 花

钱惟演

城上风光莺语乱，城下烟波春拍岸。
绿杨芳草几时休？泪眼愁肠先已断。
情怀渐变成衰晚，鸾镜朱颜惊暗换^①。
昔年多病厌芳尊，今日芳尊惟恐浅^②。

【注释】 ①鸾镜：镜的美称，古代铜镜常饰以鸾鸟图案。 ②芳尊：美好的酒杯。

【点评】 这首词是作者年老时所作。上片写春景，作者触景生情而“泪尽肠断”。下片说明伤情的原因，以春光将尽之意暗喻容颜之老。这首词语言清丽，生动

活泼。末两句以借酒消愁来表现作者的凄怆之感，十分传神。

渔家傲^①

范仲淹

塞下秋来风景异^②。衡阳雁去无留意^③。四面边声连角起^④。千嶂里^⑤。长烟落日孤城闭。
浊酒一杯家万里。
燕然未勒归无计^⑥。羌管悠悠霜满地^⑦。
人不寐。将军白发征夫泪。

【注释】 ①渔家傲：词牌名。 ②塞下：这里指西北边疆。 ③衡阳雁：湖南衡阳市内有回雁峰，为衡山七十二峰之首，相传雁至此不再南飞，遇春则北返。 ④边声：边塞的马鸣笳鼓声。 ⑤千嶂：无数陡峭并列的山峰。 ⑥燕然：山名。 ⑦羌管：西北边疆民族的一种笛子。

【点评】 这首词，在未忘守边将士之责的前提下，以几乎全部笔墨描写叙述了边塞生活的艰苦、守边将士的苦闷和作者作为主帅心中那难以排解的矛盾，读来令人颇感一种沉重苍凉的豪放——秋天的西北边疆，萧瑟

凄凉，连大雁也绝无稍事停留之意。这里的将士们终日里只有边地特有的悲凉声响连同营房的号角在耳边回响，守卫在这崇山峻岭中的孤城，一到黄昏便城门紧闭。虽然家乡远隔万里，可是还没有把敌人彻底征服，就不能返回家乡，将士们只好在月夜羌笛声中用一杯杯浊酒冲淡自己的思乡之泪。后人一致认为：范仲淹的词是北宋词风转变的开端，是苏轼、辛弃疾豪放词派的先驱。

苏幕遮

范仲淹

碧云天，黄叶地，秋色连波，波上寒烟翠。山映斜阳天接水，芳草无情，更在斜阳外。黯乡魂，追旅思。夜夜除非，好梦留人睡。明月楼高休独倚，酒入愁肠，化作相思泪。

【点评】 范仲淹是北宋初期名臣，在中国古代文学家中，有“出可为将，入可为相”的资格能力的，屈指可数，而范仲淹当之无愧。他是政治家、军事家，然而他并非为了创作而写下的作品，又使后人必须承认他



是文学家。

《苏幕遮》一词写羁旅愁思、离愁别恨，题材古老而传统，然而在同类题材作品中，这首词却名列前矛。

碧蓝的天空和白云，铺满黄叶的大地，宽阔的江水染着秋色、带着寒意流向远方，在夕阳斜映的远山间，天水相边，无穷的芳草铺向遥远的天边，看得见夕阳的余辉，却望不见家乡——这就是词的前半部，这是写景，它展开的是色彩浓烈的画卷，它渲染的是开空悠远的情思。一切羁旅他方的游子，纵使千愁万绪，读到此，也会心境为之开朗，让自己的缕缕乡思随那江水、夕阳、芳草飘然远去、返回故乡。

御街行

范仲淹

纷纷坠叶飘香砌^①，夜寂静，寒声碎^②。真珠帘^③卷玉楼空，天淡银河垂地^④。年年今夜，月华如练^⑤，长是人千里。愁肠已断无由醉，酒未到，先成泪。残灯明灭枕头敲^⑥，谙尽孤眠滋味。都来此事^⑦，眉间心上，无计相回避。



【注释】 ①香砌：指飘满落花的石阶。 ②寒声
碎：寒风吹动落叶沙沙作响。 ③真珠帘：即珍珠帘，
指华美的珠帘。 ④“天淡”句：写天宇空阔，银河清
爽。 ⑤练：素白色的绸。 ⑥皎：倾斜貌。 ⑦都
来：算来。

【点评】 这首《御街行》，可谓范仲淹婉柔绮丽风格的代表作。

词由人作，范仲淹虽也写婉约之作，但格调高于花间派词人。他描绘秋夜的寒冷孤寂，诉说多年的千里相思，刻写忧愁的无可排遣，都有自己的特色——意境高远而深沉激越，自出新意而深挚动人。他笔下的景，绝不仅仅是不出户地写那些彩屏绣帐、玉床金炉，而是“天淡银河垂地”、“月华如练，长是人千里”；他笔下的人，情感绝不做作，而是极为真诚：“愁肠已断无由醉，酒未到，人先醉”，“眉间心上，无计相回避”。

范仲淹无论是写婉约还是创豪放词，也无论是抒国家之难还是叙个人之情，都能以意境高远、深挚感人而得到后世承认，这在古代词家中，是很难得的。

千秋岁

张 先

数声鶗鴂^①，又报芳菲^②歇。惜春更

把残红折，雨轻风色暴，梅子青时节。
 永丰柳^③，无人尽日花飞雪^④。莫把
 兮弦^⑤拨，怨极弦能说。天不老，情难
 绝，心似双丝网，中有千千结。夜过也，
 东窗未白孤灯灭。

【注释】 ①鶗鴂：杜鹃鸟。 ②芳菲：芳草香花。

③永丰柳：唐代洛阳有永丰坊，西南角园中有垂柳一株，丝条柔茂。 ④花飞雪：指柳絮飞花似雪。 ⑤兮弦：琵琶第四根细弦，即危弦，音细声哀。

【点评】 这是一首伤春怀人的词。上片以景为主，融情人景；下片以情为主，融景入情。对景伤春与相思之情，融为一境。怀人是主旨。

体味全词，词情的背后隐然是一个爱情的悲剧。“心似双丝网，中有千千结。”明言男女双双互相挚爱。“雨轻风色暴”，“又报芳菲歇”，则暗示爱情尤其是妨言横遭摧残的命运。在封建社会里，命运与词中女子相同的妇女，不知有多少。《千秋岁》词调的声情，是适合于抒写这种哀怨的。